B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Shams-ud-din Iltutmish (PPT)

B.A. Part-2

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

इल्तुतमिश की उपलब्धियां

परिचय-

- इल्तुतमिश(1210-1236 ई.) का पूरा नाम शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश था। आरंभिक सुल्तानों में इल्तुतमिश का महत्वपूर्ण स्थान था। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के अधूरे कार्यो को पूरा किया। उसने देश को एक राजधानी, स्वतंत्र राज्य, राजतंत्रीय शासन और शासक वर्ग प्रदान किया।
- इल्तुतमिश एक इल्बरी तुर्क था तथा वह गुलाम वंश से संबंधित था। मुहम्मद ग़ोरी ने खोखरों के विरुद्ध इल्तुतमिश की कार्य कुशलता से प्रभावित होकर उसे 'अमीरूल उमरा' नामक महत्त्वपूर्ण पद दिया था। कुतुबद्दीन ऐबक की अकस्मात् मुत्यु के बाद लाहौर के तुर्क अधिकारियों ने कुतुबद्दीन ऐबक के पुत्र आरामशाह को लाहौर की गद्दी पर बैठाया, परन्तु दिल्ली के तुर्क सरदारों एवं नागरिकों के विरोध के फलस्वरूप कुतुबद्दीन ऐबक के दामाद इल्तुतमिश, जो उस समय बदायूँ का सूबेदार था, को दिल्ली आमंत्रित कर राज्यसिंहासन पर बैठाया गया।
- वास्तव में भारत में तुर्की शासन का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश ही था। उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी नव स्थापित तुर्की सल्तनत को विघटन से बचाकर उसकी सुरक्षा करना। जबकि मध्य एशिया के अनेक राज्य मंगोल आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट कर दिए गए।

इल्तुतमिश के समक्ष चुनौतियां

- सुल्तान का पद प्राप्त करने के बाद इल्तुतमिश को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके अन्तर्गत इल्तुतमिश ने सर्वप्रथम कुतुबद्दीन ऐबक के समय सरदार तथा मुहम्मद ग़ोरी के समय के सरदारों के विद्रोह का दमन किया। इल्तुमिश ने इन विद्रोही सरदारों पर विश्वास न करते हुए अपने 40 ग़ुलाम सरदारों का एक गुट अथवा संगठन बनाया, जिसे 'तुर्कान-ए-चिहालगानी' का नाम दिया गया। इस संगठन को 'चालीसा' भी कहा जाता है।
- सन 1215 से 1217 ई. के बीच इल्तुतिमिश को अपने दो प्रबल प्रतिद्वन्द्वी 'एल्दौज' और 'नासिरुद्दीन कुबाचा' से संघर्ष करना पड़ा। 1215 ई. में इल्तुतिमिश ने एल्दौज को तराइन के मैदान में पराजित किया। 1217 ई. में इल्तुतिमिश ने कुबाचा से लाहौर छीन लिया तथा 1228 में उच्छ पर अधिकार कर कुबाचा से बिना शर्त आत्मसमर्पण के लिए कहा। अन्त में कुबाचा ने सिन्धु नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली। इस तरह इन दोनों प्रबल विरोधियों का अन्त हुआ।

राजनीतिक सुदृढ़ीकरण

- इल्तुतमिश ने अपनी कूटनीति और साहस से भारत में तुर्की राज्य को मंगोल आक्रमण के खतरे से सुरक्षा की। उसने दिल्ली सल्तनत को गजनी के प्रभाव से मुक्त कर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया।
- इल्तुतमिश ने 1225 ई. में दक्षिणी बिहार पर आक्रमण कर मलिक जानी को वहां का सूबेदार नियुक्त किया। हुसामुद्दीन ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली और युद्ध का हर्जाना तथा वार्षिक कर देने का वायदा किया। इल्तुतमिश के वापस जाते ही हुसामुद्दीन ने पुनः अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। अब इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नासिरुद्दीन महमूद को बंगाल पर आक्रमण करने का आदेश दिया।
- 1226 ई. में महमूद ने लखनौती पर आक्रमण किया। महमूद बंगाल का बड़ी इक्ता का स्वामी या प्रांतीय गवर्नर नियुक्त किया गया। महमूद की मृत्यु के पश्चात पुनः लखनौती में विद्रोह हुआ। अतः 1230 ई. में इल्तुतमिश ने बंगाल पर आक्रमण कर शांति व्यवस्था स्थापित की तथा अलाउद्दीन जानी को बंगाल का गवर्नर बहाल किया। बंगाल अब सल्तनत का एक सूबा बन गया।

राजनीतिक सुदृढ़ीकरण-1

- इल्तुतमिश ने 1226 ई. में रणथंभौर और 1227 ई. में मंदौर पर विजय हासिल की। तत्पश्चात उसने जालौर, अजमेर, बयाना, नागौर, ग्वालियर इत्यादि राज्यों पर अधिकार किया। 1223 ई. में उसने कालिंजर पर भी आक्रमण किया एवं सफलता पायी। यद्यपि यह सफलता अस्थायी थी। उसने सन 1233- 35 के मध्य नागदा, मालवा, उज्जैन एवं भिलसा पर भी आक्रमण कर उन्हें लुटा।
- गुजरात पर भी उसने आक्रमण किया, परंतु इसे जीतने में वह सफल नहीं हो सका। इल्तुतमिश ने बदायूं, कन्नौज, बनारस, रूहेलखंड, अवध और तिरहुत पर पुनः अपना अधिकार स्थापित किया।
- इल्तुतमिश ने पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत की सुरक्षा की भी व्यवस्था की। इस क्षेत्र में फैले खोखरों के विद्रोह को दबाने एवं शांति व्यवस्था के लिए उसने सेना भेजी। सेना ने सियालकोट, जालंधर पर अधिकार कर वहां शांति व्यवस्था स्थापित की।

राजनीतिक एवं आर्थिक सुधार

- **राजनीतिक सुधार -** इल्तुतमिश का एक महत्वपूर्ण योगदान इक्तादारी व्यवस्था की स्थापना करना था। उसने पूरे राज्य को छोटी छोटी इकाइयों में विभक्त कर दिया। इन इकाइयों को इक्ता की संज्ञा दी गई। इनके अधिकारी इक्तादार कहलाए। इक्तादारी व्यवस्था ने पहले की प्रचलित सामंती व्यवस्था को समाप्त कर दिया। इक्तादारों पर केंद्र का नियंत्रण स्थापित किया गया।
- **सैनिक व्यवस्था एवं न्याय प्रणाली में सुधार -** सैनिक व्यवस्था एवं न्याय प्रणाली में भी इल्तुतमिश ने सुधार किए। उसने शाही सेना का स्वरूप निश्चित किया। सेना में बहाली करते समय योग्य व्यक्तियों को ही स्थान दिया गया। सेना के रखरखाव और सैनिकों को अच्छा वेतन देने की व्यवस्था की गई। सेना के अधिकारियों को सेवा के बदले नकद रकम न देकर जागीर देने की प्रथा आरंभ की।
- इल्तुतमिश ने उचित न्याय के संपादन के लिए दिल्ली एवं अन्य प्रमुख नगरों में काजी एवं अमीरदाद नामक पदाधिकारियों की नियुक्ति की, जो मुकदमों का निपटारा करते थे। इनके फैसलों के विरुद्ध प्रधान काजी के पास अपील की जा सकती थी।

राजनीतिक एवं आर्थिक सुधार-1

- **सिक्कों का प्रयोग-** इल्तुतमिश का एक अन्य कार्य प्रचलित मुद्रा व्यवस्था (टकसाल) में परिवर्तन करना था। उसने प्रचलित सिक्कों की जगह पर अरबी ढंग से टंका चलबाए। उसने सल्तनत कालीन दो महत्त्वपूर्ण सिक्के चाँदी का 'टंका' (लगभग 175 ग्रेन) तथा 'तांबे' का 'जीतल' चलवाया। 'टंका' चांदी के बनते थे, जिनका वजन 175 ग्रेन था।
- टंका पर खलीफा का नाम भी खुदवाया गया। ये सिक्के सिर्फ राजकीय टकसाल में ही ढाले जा सकते थे। टंकों पर टकसाल का नाम खुदवाने की प्रथा भी इल्तुतमिश ने आरंभ की। टंका के अतिरिक्त तांबे के जीतल नामक सिक्के भी जारी किए गए।
- इल्तुतमिश ने ग्वालियर विजय के बाद अपने सिक्कों पर कुछ गौरवपूर्ण शब्दों को अंकित करवाया, जैसे 'शक्तिशाली सुल्तान', 'साम्राज्य व धर्म का संरक्षक' आदि। इल्तुतमिश ने राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानान्तरित किया।

कला एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान

- इल्तुतमिश कला एवं साहित्य का संरक्षक था। स्थापत्य कला के क्षेत्र में उसकी सबसे बड़ी देन कुतुबुद्दीन ऐबक के अधूरे कुतुबमीनार को पूरा करवाना था। भारत में सम्भवतः पहला मक़बरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाज़ा का निर्माण करवाया। 'अजमेर की मस्जिद' का निर्माण इल्तुतमिश ने ही करवाया था। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की। इल्तुतमिश का मक़बरा दिल्ली में स्थित है, जो एक कक्षीय मक़बरा है।
- उसके समय में दिल्ली का सांस्कृतिक विकास हुआ। यह सांस्कृतिक केंद्र बन गया, जहां मध्य एशिया से आने वाले विद्वानों और कलाकारों को प्रश्रय मिला।